क्या महिलाएं ज़्यादा बोलती हैं?

यह एक आम धारणा है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएं बहुत ज़्यादा बोलती हैं। इस धारणा के चलते काफी सारे लतीफे आपको सुनने को मिल जाएंगे। मगर हाल ही में अमेरिका और मेक्सिको के विश्वविद्यालयों में किए गए एक अध्ययन ने इस धारणा को मिथ्या साबित कर दिया है।

टेक्सास विश्वविद्यालय के जेम्स पेनबेकर और उनके साथियों ने सबसे पहले तो एक छोटा यंत्र तैयार किया जिसकी मदद से वे समय-समय पर छात्रों की बातचीत को रिकॉर्ड कर सकते थे। इस रिकॉर्डिंग के आधार पर उन्होंने यह गणना की कि प्रतिदिन कोई व्यक्ति कितने शब्दों का उपयोग करता अथवा करती है।

परिणामों से पता चला कि मितभाषी पुरुष अपवाद ही होते हैं जबकि आम धारणा यह है कि पुरुषों की प्रकृति में ही कम बोलना आता है।

यह देखा गया कि पुरुष रोज़ाना औसतन करीब 16,000 शब्द बोलते हैं और महिलाएं भी औसतन इतने ही शब्द काम में लाती हैं। मगर ये तो औसत आंकड़े हैं। व्यक्ति-व्यक्ति में काफी विविधता भी देखी गई। दोनों ही लिंगों के बक-बक करने वाले दिन में 24,000 शब्द बोलते हैं, जबकि अंतर्मुखी लोग मात्र 8,000 शब्दों से काम चला लेते हैं।

साइन्स पत्रिका में प्रकाशित इस शोध पत्र के ज़रिए पेनबेकर और साथियों ने पूर्व में किए गए एक अध्ययन के परिणामों पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। पिछले वर्ष कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की लूआन ब्रिज़ेन्डाइन ने अपनी पुस्तक में दावा किया था कि दिन भर में जहां पुरुष मात्र 7,000 शब्द बोलते हैं वहीं महिलाएं औसतन 20,000 शब्द उच्चारित कर डालती हैं। हालांकि बाद में उन्होंने अपना दावा वापिस ले लिया था। मगर सोचने वाली बात तो यह है कि समाज में ऐसी धारणाएं बनती कैसे हैं और किन माध्यमों से इन्हें प्रसारित किया जाता है। ***(स्रोत फीचर्स)***